

स्वामी वविकानंद की पुण्यतथि

स्रोत: बजिनेस स्टैंडर्ड

प्रत्येक वर्ष 4 जुलाई को **स्वामी वविकानंद की पुण्यतथि** के रूप में मनाया जाता है। उन्हें **आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद का जनक माना** जाता है और उन्हें 19वीं सदी के अंत में अंतर-धार्मिक जागरूकता बढ़ाने तथा **हिंदू धर्म को एक प्रमुख विश्व धर्म का दर्जा दिलाने का श्रेय भी दिया जाता है।**

स्वामी वविकानंद के संबंध में प्रमुख वशिषताएँ क्या हैं?

- **परचिय:** वविकानंद का जन्म 12 जनवरी, 1863 को कलकत्ता में हुआ और उनके बचपन का नाम नरेंद्रनाथ दत्त था।
 - वर्ष 1893 में खेतड़ी राज्य के महाराजा अजीत सहि के अनुरोध पर उन्होंने 'वविकानंद' नाम अपनाया।
 - उन्होंने विश्व को वेदांत और योग के भारतीय दर्शन से परिचित कराया।
 - वर्ष 1902 में बेलूर मठ में उनकी मृत्यु हुई। पश्चिम बंगाल में स्थिति बेलूर मठ, रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मशिन का मुख्यालय है।
 - प्रत्येक वर्ष **स्वामी वविकानंद की जयंती (12 जनवरी)** को **राष्ट्रीय युवा दिवस (National Youth Day)** के रूप में मनाई जाती है।
- **आध्यात्मिक योगदान:**
 - वह भारत के महानतम आध्यात्मिक नेताओं और बुद्धिजीवियों में से एक थे तथा रामकृष्ण परमहंस के प्रमुख शिष्य थे।
 - मानवीय मूल्यों के संबंध में विश्व को वविकानंद का संदेश उपनिषदों और गीता की शिषाओं के साथ-साथ बुद्ध तथा ईसा द्वारा स्थापित उदाहरणों पर आधारित है।
 - उनका मशिन परमार्थ (सेवा) और व्यवहार (व्यवहार) के बीच, साथ ही आध्यात्मिकता तथा दैनिक जीवन के बीच की खाई को पाटना था।
 - उन्होंने सेवा के सिद्धांत का समर्थन किया। जीव (जीवों) की सेवा करना शिव की पूजा मानी जाती है।
 - वर्ष 1893 में शिकागो में विश्व धर्म संसद में उनके ऐतिहासिक भाषण ने पश्चिमी दुनिया को हिंदू दर्शन (नव-हिंदू धर्म) से परिचित कराया।
 - उन्होंने हमारी मातृभूमि के उत्थान के लिये शिषा पर जोर दिया। उन्होंने मानव-नरिमाण और चरतिर-नरिमाण वाली शिषा की वकालत की।
 - उन्होंने अपनी पुस्तकों में सांसारिक सुख और आसक्ति से मोक्ष प्राप्त करने के चार मार्ग बताए-राजयोग, कर्मयोग, ज्ञानयोग तथा भक्तियोग।
 - उन्होंने सेवा, शिषा और आध्यात्मिक उत्थान के आदर्शों के प्रचार के लिये वर्ष 1897 में **रामकृष्ण मशिन** की स्थापना की।

रामकृष्ण मशिन

- रामकृष्ण मशिन व्यापक शिषा-संबंधी और लोकोपकारी कार्यों में संलग्न है तथा भारतीय दर्शन के संप्रदाय **अद्वैत वेदांत** के आधुनिक संस्करण का अनुकरण करता है।
- रामकृष्ण मशिन के दो उद्देश्य थे:
 - संन्यास और आध्यात्मिक जीवन के लिये प्रतबिद्ध भक्तिषुओं को संगठित करना जो वेदांत के सार्वभौमिक संदेश का प्रसार कर सके।
 - जाति, पंथ या रंग की परवाह किये बिना सभी पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को ईश्वर की सच्ची अभिव्यक्ति के रूप में देखते **हुलोकोपकारी तथा धर्मार्थ गतिविधियों में संलग्न होना।**
- मशिन की स्थापना वर्ष 1897 में वविकानंद द्वारा कोलकाता के पास संत रामकृष्ण (वर्ष 1836-86) के जीवन में सन्नहितिवेदांत की शिषाओं का प्रसार करना और भारतीय लोगों की सामाजिक स्थितियों में सुधार करने के दोहरे उद्देश्य के साथ की गई थी।
- आदर्श वाक्य: "आत्मनो मोक्षार्थं जगद्धिताय च" ("आत्मा का मोक्ष और जगत का कल्याण")।

